कृषि : कृषि को प्रभावित करने वाले कारक BA Part-II Paper-IV
Agriculture (Factors Affecting Agriculture)

1 भौतिक घटक (Physical factors) → इसके अंतर्गत कृषि पर प्रभाव डालने वाले घटक भूमि की प्रकृति, मिट्टी के गुण ; तापमान तथा वर्षा की मात्रा सम्मिलित किए जाते है। इनमें से कई घटकों में मानव ने अपने प्रयासों से विशेष परिवर्तन किये है। जिन-भू-भाग में जल का अभाव पाया जाता है वहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध कराए गये है जहाँ मिट्टी की उर्वराशक्ति समाप्त हो गयी है वहाँ खाद आदि देकर उसे पुनः उर्वर बनाया गया है, किन्तु जिन क्षेत्रों में ऐसा सम्भव नही हो पाया है वहाँ उसने कृषि के स्वरूप को ही परिवर्तित कर दिया है जैसे, अत्यंत शीत प्रदेशों में शीघ्र पकने वाली फसलों का अधिकार किया गया है। अनेक क्षेत्रों में रोगों और कीड़ो से मुक्त बीजों का प्रयोग कर उत्तम फसलें प्राप्त की जा रही है।

कृषि पर प्रभाव डालने वाले भौतिक कारक निम्न है :—

(I) जलवायु दशाएँ (Climate Conditions)
(II) भूमि की प्रकृति (Nature of the land)
III उपजाऊ मिट्टी (fertile soil)

(I) जलवायु दशाएँ Climate Conditions → कृषि कार्यों पर सर्वाधिक प्रभाव तापमान और वर्षा का पड़ता है। पौधों की वृद्धि के लिए एक निश्चित तापमान की आवश्यकता होती है, इसमें कम में अंकुर निकलना सम्भव नहीं होता। साधारणतः जिन भूभागों में ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 50° फा० से कम मिलता है वहाँ कृषि कार्य नहीं की जा सकती है। पौधे गरमी में ही बढ़ते हैं इसलिए उन्हें उष्णता की आवश्यकता होती है। ऊँचे अक्षांशों में ग्रीष्म ऋतु छोटी होती है किन्तु दिन की लम्बाई अधिक होने से गरमी की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध हो जाती है।..

निम्न अक्षांशों में जहाँ ठण्डी ऋतु कठोर नहीं होती वहाँ वर्ष भर ही कृषि कार्य निरंतर चलता रहता है, किन्तु इसमें वर्षा की मात्रा के अनुसार थोड़ा बहुत परिवर्तन होता रहता है।

फसलों के उत्पादन पर वर्षा की मात्रा का बहुत प्रभाव पड़ता है। ऊँचे अक्षांशों में गर्मियों में गर्मियाँ अधिक कठोर नहीं होती अतः पौधों से नमी की मात्रा भाप बनकर नहीं उड़ पाती और न वायु इतनी शुष्क होती है कि वह पौधों की नमी को सुखा सके।

यही कारण है कि शीतोष्ण कटिबंध में उच्च अक्षांशों की अपेक्षा फसलों को बहुत कम मात्रा में जल की आवश्यकता पड़ती है।

शीतशीतोष्ण प्रदेशों में फसलो के लिए कम से कम 20 से 80 सेमी. वर्षा पर्याप्त मानी जाती है जबकि अर्द्धोष्ण प्रदेशो में 70 से 100 सेमी. वर्षा होना आवश्यक है।

(II) भूमि की प्रकृति → (Nature of the land)

कृषि उन ही भागो मे किया जा सकता है जहाँ हल चलाने के लिए समतल भूमि उपलब्ध हो।

पहाड़ी ढलों पर भी भूमि को छोटे-छोटे टुकड़ो या सीढ़ियो के आकार में काटकर खेती की जाती है। ऐसे पहाड़ी ढाल हजारों मीटर की ऊँचाई तक पाये जाते है। अधिक से अधिक 45° अंश के ढलो पर सफलतापूर्वक सीढ़ीनुमा कृषि की जा सकती है।

III उपजाऊ भूमि → खेती उन्ही जगहों पर की जाती है जहाँ पर उपजाऊ भूमि मिलता है।

विश्व में खेती के कॉप, कछार, या दोमट मिट्टियाँ सबसे अधिक उपयुक्त है।

बलुई नमकीन या दलदली भूमि या मिट्टी में कृषि नहीं की जाती है।

यही कारण है कि मरुस्थलो मे नदियो के दलदली व क्षेत्र मे कृषि का अभाव पाया जाता है।

NEXT CLASS